यहां पर साथ ही परमेश्वर ने आकाश के अन्तर मे उडनेवाले पक्षियो को भी बनाया। "इसलिए परमेश्वर ने जाति–जाति के बडे–बडे जल–जन्तुओं कि और उन सब जीवित प्राणियां की भी सृष्टी कि जो चलते फिरते है। जिन से जल बहुत ही भर गया। और एक–एक जाति के उडनेवाले पक्षियों कि भी सृष्टी कि, और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" उत्पत्ति 1:21

लिखा है " परमेश्वर ने जाति–जाति के बडे–बडे जल जन्तुओ कि सृष्टी कि"। कुछ जल जन्तु अपने आकार के लिए प्रख्यात है। जैसे व्हेल मछली जो अपनी विशालता के लिए प्रसिध्द है। जो 75 फिट लंम्बी भी हो सकती है। मत्ती 12:40 मे भी लिखा है "योना भी एक जल जन्तु के पेट मे 3 दिन था। और लिखा है ऐसे ही बडे–बडे प्राणियो कि भी जो चलते और फिरते है जल से बहुत ही भर गया। मैने बताया कि परमेश्वर ने जल–जन्तु को बहूतायत से बनाया क्योंकि जल उनसे बहुत ही भर गया। आकाश के पंक्षियों के लिए ऐसा नही लिखा कि आकाश उनसे बहुत भर गया।

और परमेश्वर ने यह उनको आशीष दी, कि फूलो– फलो और समुद्र के जल मे भर जाओ और पृथ्वी पर बढो। एक नये तत्व को हम पांचवे दिन के परमेश्वर के कार्य मे पाते है। कि ना केवल उसने इन सभो को अच्छा कहा, परन्तु उन्हे आशीष भी दी। अब तक प्रभु ने जो कुछ बनाया था उनको उसने केवल अच्छा ही कहा था, पर पहली बार वह उसको आशीष भी दे रहा है। बाइबल में यहां पर पहली बार आशीष शब्द का इस्तेमाल हम देखते है। प्रभु ने कहा फूलो–फलो। कई बार हम आशीष कल्पना करते है और बढने की, फेलने की कोशीश भी करते है, परन्तु एक बात मै आपको इस वचन के द्वारा कहना और सिखाना चाहुंगा कि परमेश्वर ने हर आशीषों के लिए एक समय नियुक्त कर रखा है। हमे बस उसका इन्तजार करना है। चार दिन केवल उसने अच्छा कहा परन्तु अन्त मे पांचवे दिन उसने आशीष दी। आपके जीवन के चार दिन शायद गुजर गए हो परन्तु शायद अब आपके जीवन का पांचवा दिन भी आ रहा है। तैयार हो जाइए। हर शाम के बाद, हर काली रात के बाद दिन होनेवाला है, भोर होनेवाला है। मुक्ति का सुरज यीषु मसीह उगनेवाला है।

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवा दिन हो गया"। उत्पत्ति 1:23

प्रभु आपको आशीष दे। आमीन।

Rev.Vinay Dube

प्रिय,रेव्ह.विनय दुबे

सादर प्रणाम,

बाइबल स्कूल का संपादकीय लेख मुझे बहोत ही अच्छा लगा।इस पत्रीका को खोलते ही जीवन में एक नया जोश आ गया। आत्मिक लेख ,प्रेरख प्रसंग और विश्व की सृष्टी उत्पत्ति 1:1 के अनुसार आदि मे परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी कीं। सृष्टी के सात दिनों के पहले ही सृष्टी की निर्मिती हो चुकी थी बल्की पृथ्वी सुनसान और बेड़ोल और अंधियारे से भरी थी।आत्मा मण्डलाता था।परन्तु परमेश्वर ने पहले दिन प्रकश बनाया।यह मुझे अभी अभी समझ मे आया।यह बडी खुशी की बात है।यह आत्मिक लेख पढकर मुझे बहोत खुशी हुई।

प्रभु का सामर्थी हात सदा आप सभों के साथ बना रहे और हर लेख प्रभू की महीमा के लिए भरपूरी से इस्तेमाल किए जाए। धन्यवाद।

सि.उषा जॉन

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल स्कूल / Bible School

अंक: 4 *Course-3* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

.....पिछले अंक का शेष भाग

"तब परमेश्वर ने बडी ज्योतियॉ बनाई उन मे से बडी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिए और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिए बनाया, और तारांगण को भी बनाया"। उत्पत्ति 1:16

हम आगे पढते है कि परमेश्वर ने बडी ज्योतियॉ बनाई। लेकिन अग्रेजी मे इसका भाषांतर महान (Great light) ज्योति के रूप मे किया गया। यह उनके आकार के अनुसार बडी नही थी। परन्तु उनके गुणों कि वजहसे महान थी। बडी ज्योति को हम सुरज कहते है। जो दिन पर प्रभुता करती थी। और छोटी ज्योति को हम चंद्रमा कहते है जो रात पर प्रभुता करती थी। यह एक महत्वपूर्ण सिखनेवाली बात है,कि रात के उपर भी प्रभुता करने के लिए ज्योति बनाइ गई थी। प्रभु ने अन्धकार या रात को ऐसा ही नही छोडा। परन्तु रात पर प्रभुता के लिए भी इन्तजाम किया था। छोटी ज्योति के रूप मे। हमारे जीवन मे शायद अन्धकार होगा। परन्तु दोस्तो मे नासरी यीशु के नाम में आपको यह बताना चाहता हु कि परमेश्वर ने आपके जीवन के अन्धकार के लिए भी इन्तजाम किया क्योंकि आखिर यीशु ही जगत की ज्योति है। वो रात तो थी लेकिन उसके लिए भी परमेश्वर ने ज्योति का इन्तजाम किया हुआ था। यहॉ पर एक और बात हमे सिखने को मिलती है और वह थी कि दिन और रात दोनो पर प्रभु प्रभुता करना चाहता था। इसलिए उसने दोनो पर प्रभुता करने के लिए बडी और छोटी ज्योति को बनाया। प्रभुता करना यही परमेश्वर का शुरूवात से उद्देश था। वह खुद प्रभुता करता है और चाहता है कि आप भी प्रभुता यानि अधिकार का जीवन बिताएँ।

"क्योंकि यीशु मसीह ने पहले कहा कि जगत कि ज्योति मै हु और बाद मे कहा कि तुम जगत कि ज्योति हो" मत्ती 5:12,13

प्रभु शुरूवात से ही यही चाहता था, कि मनुष्य अधिकार का जीवन बिताए। उत्पत्ति 1:28 मे परमेश्वर ने मनुष्य को यही आज्ञा दी थी कि पृथ्वी को वश मे कर लो। परमेश्वर ने रात को वश मे करने के लिए तारांगण भी बनाए। पहले चांद को बनाने के साथ परमेश्वर ने तारांगण को भी बनाया मतलब वह चाहता था की अंधकार मे भी ज्योत तो होनी चाहिए। सुर्य, चंद्रमा और तारे इनका आकाश मे रहना यही हम यहां पर नही सीखते परन्तु हम यह भी सीखते है कि यीशु मसीह हमारी मुक्ति का सुरज हैं, (मलाकी 4:2) चांद यह कलिसिया का प्रतिक है क्योंकि कलिसिया परमेश्वर के प्रकाश का प्रतिरूप है। (प्रकाशितवाक्य 12:1) तारे उन विश्वासी संतो के समान है जो उनको धार्मिकता कि और ले जाते है। "जैसे (दानिएल 12:3) में कहा गया है आइए हम भी तारांगण के समान अपने उचित स्थानों पर रहकर अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर के उद्देश और इच्छा को पूरा करे।

"परमेश्वर ने इन्हे आकाश के अन्तर पर रखा कि वे पृथ्वी पर प्रकाश दे"।

लिखा है परमेश्वर ने इन ज्योतियो को आकाश के अन्तर पर इसलिए रखा कि वह पृथ्वी पर प्रकाश दे। "रखा" इस शब्द पर मैं थोडा सा विश्लेशण करना चाहता हुँ। परमेश्वर ने इन ज्योतियो को चाहे वह बडी ज्योती थी या छोटी पर उन्हे पृथ्वी के लिए ही रखा। (मत्ती 5:14–16) मे मैने बताया कि यीशु ने कहा कि तुम जगत कि ज्योति हो। लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नही परन्तु दीपस्तम्भ पर रखते है। तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है। ठीक उसी प्रकार हमे यह बात समझनी होगी कि हमे परमेश्वर ने पृथ्वी रखा है। हर विश्वासी जहां भी रहता है, जिस किसी शहर मे, गांव मे, मुहल्ले मे वहां पर हमे रखा हुआ है। मुझे कुछ सालो पहले दिया गया मेरा एक संदेश याद आ रहा है कि

"Beleivers are kept"

विश्वासी को रखा गया है। परमेश्वर ने आप हर एक कें जो यीशु मसीह पर विश्वास रखते है, उन्हे रखा है। चाहे आप कही भी नोकरी करते हो, काम करते हो, कॉलेज मे पढते हो परमेश्वर ने आपको रखा हुआ है। शायद आप छोटे ही क्यो न हो ,स्कुल मे पढते हो लेकिन प्रभु ने आपको रखा हुआ है हमे इस बात को नही भुलना। जिस प्रकार से एक कमरे मे हम बल्ब लगाते है ताकि वह सारे कमरे को रोशनी दे ठीक उसी तरह सें प्रभु ने हमे रखा हम जगत को, पृथ्वी को, या वो लोग जो सांसारिक है उन्हे रोशनी दे। दानिएल जब बाबेल मे आया तब वह गुलाम था। लेकिन उसने राशनी देना नही छोडा। जब जब उसे मौका मिलता उपने प्रभु परमेश्वर का नाम वह ना केवल लोगो को लेकिन राजाओंको बताता था। यहॉ पर एक बात मै स्पष्ट करना चाहुंगा कि दानिएल ने बाबेल की, बन्धुवाई मे तीन राजाओं की सेवकाइ कि, लेकिन परमेश्वर का नाम और उसकी महीमा करने से कभी नही हिचकिचाया।पढिए दानिएल 1 – 6 अध्याय। वह छोटी लडकी जो नामान के घर मे काम कर रही थी उसने परमेश्वर के सामर्थ की पहचान उस मे करवाई 2 राजा 5 अध्याय। दोस्तो कई बार हम परमेश्वर के लिए चमकने का अवसर गवॉ देते है। जबकि परमेश्वर ने हमे रखा ही इसलिए है कि हम पृथ्वी पर ज्योती देने का काम करे।

एक और बात की और मै आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हुं कि पुराने जमाने मे यहुदी इन आकाशमंडल को, नक्षत्रो को बडा ही महत्व दिया करते थे। आकाश के चिन्हों से वे अपने त्योहारो को मनाते थे। आकाशमंडल की कुछ बातो को वह परमेश्वर का संकेत भी मानते थे। यहा तक कि यीशु के जन्म के वक्त वह ज्योतिषि नक्षत्र देखकर ही पहचाने थे कि यीशु जो संसार का उध्दारकर्ता है का जन्म हुआ है। यही नही उन्हे मार्गदर्शन करनेवाला भी एक तारा ही था। परन्तु परमेश्वर ने निर्मिती के समय चौथे दिन इन आकाशमंडल का बहुत अधिक वर्णन नही किया उसके बारे मे बहुत अधिक जानकारियॉ उसने उत्पत्ति मे कतई नही दी क्योंकि परमेश्वर के लिए वह अधिक महत्वपूर्ण नही था। और वह चाहता था कि मनुष्य भी उन्हे बहुत अधिक महत्व ना ही दे। इस्त्राएलियो को यह आदेश भी उसने दिया था कि वे अपने अविश्वासी और अधर्मी पडोसियो कि नकल कर आकाश मण्डलीय वस्तुओ की पूजा न करे।सुर्य चद्रमा और तारो को नमन या उनकी आराधना ना करे। पढिए व्यवस्थाविवरण 4:15–19, 17:2–7 उन्हे केवल सत्य परमेश्वर की आराधना करनी थी,जिसने स्वर्गीय सेना की सृष्टी की, निर्गमन 20:1–6 तो भी यहुदियो ने उसकी आज्ञाओ को नही माना यिर्मयाह 8:2, 19:13 यहेजकेल 8:16, सपन्याह 1:4–6 और अपने अपराध के कारण दुख भोगा। प्राचीन काल मे लोग सुर्य, चंद्र और तारों को देखकर चकित होते और उनकी आराधना करते। आज भी हम इस अन्तिम युग मे कुछ इसी प्रकार के माहोल को देखते है। कई विश्वासी लोग भी इन नक्षत्रो और शगुन पर विश्वास करते है। ग्रहण से घबराते है। उन्हे लगता है कि ग्रहण उन्हे हानी पहुँचा सकता है, परन्तू हमे यह नही भुलना कि इन्हे परमेश्वर ही ने बनाया है। ताकि यह पृथ्वी को प्रकाश दे। तथा दिन और रात दोनो पर प्रभुता करे और उजियाले को अन्धियारे से अलग करें। और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ इसी प्रकार चौथा दिन हो गया।

पांचवा दिन

पशु-पक्षी और जल-जन्तु। उत्पत्ति १:२०-२३

"फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियो से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के उपर आकाश के अन्तर मे उडे"।

आइए पांचवे दिन कि कुछ विशेषताओं को हम सीखने की कोशिश करते है। लिखा है फिर परमेश्वर ने कहा "जल जीवित प्राणियो से" इस वक्त मै चाहुँगा कि हम थोडी अंग्रजी बाइबल की भी मदत ले। And God said "Let the water forth abundantly the moving creature that hath life" (KJV) यहां दो जगह पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहुँगा जो हमारी हिन्दी बाइबल मे इतनी स्पष्टता से नही पाते। पहली "Moving " अर्थात गतियुक्त बढनेवाली इस शब्द के मुल इब्रानी भाषा मे "SHERETS" शब्द का इस्तेमाल किया गया जिसका अर्थ होता है रेंगणेवालों का झुण्ड। हमे यह नही भुलना कि पाचवे दिन परमेश्वर ने केवल जल–जन्तु को बनाया और केवल जन्तु जो जल के तो है परन्तु पृथ्वी पर भी रेंगते है, या चलते है। जैसे धडियाल, दरियाई घोडे और कछुए इत्यादि क्योंकि वास्तव मे भुमि पर चलनेवाले पशु परमेश्वर ने छअवे दिन बनाए। तो हम यह निसंदेह केह सकते है कि पांचवे दिन जब जल– जन्तु का और चलने फिरने वाले प्राणियों की सृष्टी कि तो तात्पर्य सिर्फ इतना ही था कि वे सब जल–जन्तु ही थे। परन्तु इनमे से कुछ पृथ्वी और जल दोनो पर चलते थे। उत्पत्ति 1:21 यहां चलनेफिरने वाले जन्तु से तात्पर्य वन पशु या घरेलु पशु से कतई नही है।

दुसरी बात जो मै आपको बताना चाहता हु वह यह कि लिखा है "Hath Life" यानि वह जीनमे जीवन है। इसे मुल इब्रानि भाषा में "NEPHESH" कहा गया जिसका अर्थ है "Soul" जीवआत्मा, प्राण या जीव। मतलब वह जीव जीसमे एहसास, है, इच्छाएँ इत्यादि है। यह पहली सृष्टी जिसमे जीवन था। इसलिए परमेश्वर को धन्यवाद हो कि वह उसके समय पर धीरे धीरे वहां मुड रहा था जहां जीवन था। साथ ही यहां पर यह भी लिखा "जल जीवित प्राणियो से बहुत ही भर जाए"। प्रभु ने केवल जल जीवित प्राणियो के लिए बहुत शब्द का इस्तेमाल किया बाकि प्राणियो को परमेश्वर ने बनाया, पंक्षियो को परमेश्वर ने बनाया और आगे चलकर मनुष्य को भी बनाया। परन्तु बहुत शब्द का इस्तेमाल या झुण्ड इब्रानि मे शब्द का इस्तेमाल केवल जलचरो के लिए ही किया। इन्ही समुद्री जन्तुओ पर निर्भर है। आशिष देता है तो बहुतायत ही से देगा।